



## मॉक इंटरव्यू समर फातमा रज़िवी

### उम्मीदवार का परिचय

नाम: समर फातमा रज़िवी  
पति का नाम: असगर हुसैन रज़िवी  
माता का नाम: शमा रज़िवी  
जन्म स्थान: लखनऊ  
जन्म तिथि: 14 जुलाई, 1986

### शैक्षणिक योग्यता:

- **हाई स्कूल:** ला-मार्टीनियर गर्ल्स कॉलेज, लखनऊ (94.5%)
- **इंटरमीडिएट:** ला-मार्टीनियर गर्ल्स कॉलेज, लखनऊ (94.5%)
- **स्नातक:** अवध गर्ल्स डिग्री कॉलेज (भूगोल, अंग्रेज़ी साहित्य, राजनीति विज्ञान) (74.5%)
- **परास्नातक:** लखनऊ विश्वविद्यालय (भूगोल) (77.5%)
- UGC NET-JRF उत्तीर्ण, शोधरत ।

माध्यम: अंग्रेज़ी

प्रयास: दूसरा

वैकल्पिक विषय: भूगोल

हॉबीज़: उर्दू साहित्य, सूफी संगीत, डबिट ।

सेवा संबंधी वरीयताएँ: IAS, IFS, IRS, IPS IC & ES, IRTS, IRAS

राज्य संबंधी वरीयताएँ: उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल ।

### वशेष:

1. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में भूगोल की अससिस्टेंट प्रोफेसर ।
2. डबिट की कई प्रतियोगिताओं में विजिता ।

(समर का इंटरव्यू दूसरी पाली में मैडम रजनी राजदान के बोर्ड में था, अपनी टेबल पर उनका पहला ही नम्बर था । उनका जो इंटरव्यू संपन्न हुआ उसका भावानुवाद प्रस्तुत है ।)

समर फातमा रज़िवी उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में जन्मी, पली-बढ़ी और फलिहाल अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग में अससिस्टेंट प्रोफेसर हैं । समर के पति असगर हुसैन रज़िवी लखनऊ विधिके उर्दू विभाग में प्रोफेसर हैं । उनके दादा एहतेशाम रज़िवी उर्दू के बड़े विद्वान एवं शायर थे और वे भी लखनऊ विश्वविद्यालय से जुड़े थे । समर की माँ भी एक पढ़ी-लिखी महिला हैं जो महान उर्दू शायर अली सरदार जाफरी के खानदान से संबंधित रही हैं । फलिहाल वे 'शमा चकिन हाउस' नाम से लखनऊ में अपना बुटीक चलाती हैं । उर्दू की इतनी समृद्ध पृष्ठभूमिके बावजूद समर ने भूगोल को अपना करियर विकल्प

और सविलि परीक्षा में वैकल्पिक विषय भी चुना है। इसकी मुख्य वज़ह उनकी प्रिय शिक्षिका उपमा चतुर्वेदी की प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन रहा। हालाँकि समर को अपनी समृद्ध परंपरा से खासा लगाव है पर उसे उन्होंने लगाव तक ही सीमति रहने दिया तथा अपने कैरियर को आगे बढ़ाने के लिये भूगोल विषय को चुना। सविलि सेवा परीक्षा में वे अपने पहले ही प्रयास में इंटरव्यू तक पहुँची थीं, और इस बार दूसरे प्रयास में उनका चयन IRS में हो गया। हालाँकि इंटरव्यू में बहुत अच्छे अंक लाने के बावजूद वे अपनी प्राथमिकता वाली सर्विस IAS नहीं पा सकीं, पर वे अभी भी उसे प्राप्त करने का दृढ़ इरादा रखती हैं। जब देश में मुसलमि आबादी बढ़ाई-लखाई और नौकरी दोनों ही जगह आनुपातिक रूप से काफी पछिड़ी हुई है, उसमें भी मुसलमि महिलाएँ तो और भी वंचित हैं, ऐसे में समर फातमि रज़िवी जैसी मुसलमि महिलाओं का देश की सर्वोच्च सेवा में चयन एक उम्मीद एवं बदलाव की ताज़ा बयार के समान लगता है। प्रस्तुत है समर फातमि के इंटरव्यू की शब्दशः दास्तान, जो आपको अवश्य ही प्रेरति करेगी।

## साक्षात्कार

**अध्यक्ष:** आपके नाम में लगे 'समर' का अर्थ क्या है?

**स.फा.रज़िवी:** मैम, 'फल, लाभप्रद' जैसे कुछ अर्थ हैं, इस शब्द के। वैसे अब्बा और अम्मी दोनों के नामों का स्वर होने की वज़ह से मेरा यह नाम रखा गया था।

**अध्यक्ष:** आपके परिवार में उर्दू-फारसी के इतने विद्वान हैं और खुद आपकी हॉबी भी उर्दू साहित्य रही है। तब तो आपको उर्दू साहित्य का चुनाव करना चाहिये था।

**स.फा.रज़िवी:** मैम, मुझे उर्दू साहित्य को जानने, सुनने और पढ़ने का बचपन से मौका मिला है। इसे लेकर मेरे भीतर एक अंदरूनी लगाव भी है पर अवध गर्ल्स कॉलेज में ग्रेजुएशन की पढ़ाई के दौरान मेरी भूगोल की मैम उपमा चतुर्वेदी ने मुझे भूगोल विषय को लेकर बहुत उत्साहित किया, उनका ही प्रभाव था कि मैंने भूगोल को अपने कैरियर विकल्प के रूप में चुना।

**अध्यक्ष:** अच्छा! तो ग्रेजुएशन में आपके और कौन-कौन से विषय थे?

**स.फा.रज़िवी:** भूगोल के अलावा इंग्लिश लिटरेचर और पोलिटिकल साइंस।

**अध्यक्ष:** तो क्या इन विषयों में उतनी रुचि पैदा नहीं हुई?

**स.फा.रज़िवी:** मैम, मुझे बचपन से नदियों, पहाड़ों, देशों के बारे में पढ़ने-जानने का बड़ा शौक था। मैं उनके बारे में पूछ-पूछ कर सबको तंग कर देती थी। यही वज़ह रही कि जब मुझे इसे विषय के रूप में पढ़ने को मिला तो इसमें मेरी विशेष अभिरुचि जाग उठी।

**अध्यक्ष:** अब तो आपके बचपन का सपना पूरा हो रहा है, आप एक सेंटरल यूनिवर्सिटी में अपना मनपसंद विषय पढ़ा भी रही हैं, और क्या चाहिये इससे ज़्यादा। अगर इस तरह कोई विषय मेरा 'पैशन' होता तो मैं तो पढ़ाने का ही विकल्प चुनती।

**स.फा.रज़िवी:** मैम, मेरे लिये भी यह बहुत मुश्किल फैसला था, हमारे अम्मी-अबू हम दोनों बहनों को कलेक्टर बनाना चाहते थे। पर बड़ी दीदी को डॉक्टर बनने में दिलचस्पी थी और वे बन भी गईं, ऐसे में सबकी आशा का केन्द्र मैं थी। मैं उन सबका दिल नहीं तोड़ सकती थी, साथ ही मुझे भी अपने घरवालों की राय से इत्तेफाक था कि भले ही मैंने व्यक्तिगत अभिरुचि के स्तर पर एक तरह से चरम पा लिया है पर क्या हमारा काम यहीं खत्म हो जाता है? क्या हमें देश की गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा पर काम करने का अवसर छोड़ देना चाहिये? नश्चय ही यह जज़बाती फैसला था पर मुझे लगा कि हमारे अभिभावक सही हैं और इस बात ने मुझे ताकत दी। मैम मैं जानती हूँ कि इन समस्याओं का हल मेरे अकेले के वश की बात नहीं है पर अपने हसिसे का पूरा प्रयास तो मैं कर ही सकती हूँ।

**अध्यक्ष:** समर, आप एक डबिटर भी रही हैं, अगर आपको हज़िब के पक्ष या विपक्ष में बोलना हो तो दोनों मामलों में कौन-से तरफ होंगे?

**स.फा.रज़िवी:** मैम, अगर मुझे हज़िब के पक्ष में बोलना हो तो मैं इसे इस्लामिक आध्यात्मिक परंपरा और सामाजिक सुरक्षा के एक आयाम की तरह लूंगी। अगर इसके विरोध में जाना होगा तो महिलाओं के चयन की स्वतंत्रता, महिलाओं की गरमा तथा आधुनिक लैंगिक समानता के मानदंडों जैसे तर्कों का सहारा लूंगी।

**अध्यक्ष:** व्यक्तिगत रूप से इस बारे में आपको क्या लगता है?

**स.फा.रज़िवी:** मैम, मेरे घर में कभी इसके लिये प्रेरति नहीं किया गया। हमारी अम्मी हज़िब पहनती रहीं, पर हम दोनों बहनों ने नहीं पहना। मुझे लगता है कि यह मुद्दा धार्मिक से ज़्यादा राजनैतिक है। मसिर, तुर्की, ईरान जैसे इस्लामी मुल्कों में ऐसी सरकारें रहीं, जब औरतें बेहद मॉडर्न ड्रेस पहनती रहीं, पर 80-90 के दशक में सऊदी अरब तथा अन्य खाड़ी देशों से वहाबी विचारों का नरियात शुरु हुआ और धीरे-धीरे हज़िब को इस्लाम का ज़रूरी हिस्सा बताने की होड़ ही लग गई।

**सदस्य-1:** फ्रांस ने तो हज़िब पर प्रतिबंध लगा दिया है, क्या यह उचित है?

**स.फा.रज़िवी:** हाँ, अपनी धर्मनिरपेक्ष नीति की वज़ह से फ्रांस ने ऐसा किया है, पर यह अच्छा कदम नहीं है। वे इससे कट्टरवादियों को उकसावा ही देंगे। फ्रांसीसी सरकार की इस पहल के पीछे चाहे कोई दुराशय न हो लेकिन उनका यह कदम हज़िब पर नहीं, इस्लाम पर प्रहार माना जाएगा।

**सदस्य-1:** प्रतिबंध लगाते समय फ्रांस ने अपने राष्ट्रीय मूल्यों का तर्क दिया था। किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय मूल्य यदि किसी धर्म के मूल्य से टकराते हों, तो क्या किया जाना चाहिये?

**स.फा.रज़िबी:** सर, फ्रांस के राष्ट्रपति के तर्क मैंने उस समय पढ़े थे। सांस्कृतिक विविधता और चयन की स्वतंत्रता भी फ्रांसीसी मूल्यों में शामिल हैं। फ्रांस के इस प्रतिबंध के पीछे आप्रवासियों को लेकर फ्रांसीसी समाज के उदार एवं अनुदार तबकों के बीच चल रही राजनीति का असर था।

**सदस्य-1:** अच्छा, आपने उर्दू साहित्य को अपनी हॉबी बताया है। किस तरह का साहित्य पसंद करती हैं आप?

**स.फा.रज़िबी:** उर्दू में उर्दू पोएट्री एवं उर्दू कथा साहित्य दोनों को पसंद करती हूँ। शायरों में मैं फारिद, अहमद फराज़, अली सरदार जाफरी, मजाज़, जगिर मुरादाबादी, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, गालिब आदिको तथा उर्दू कथाकारों में मंटो, कृष्ण चंदर, मुश्ताक अहमद युसुफी, इस्मत चुगताई, कुर्रतुल ऐन हैदर, मोहम्मद हुसैन आज़ाद, शम्सुर्रहमान फारूकी मेरे प्रिय रहे हैं।

**सदस्य-2:** हाल में कोई ऐसी किताब जो आपको बहुत अपील की हो?

**स.फा.रज़िबी:** शम्सुर्रहमान फारूकी की "कई चाँद थे सरे आसमाँ" मुझे बहुत पसंद आई।

**सदस्य-2:** किस बारे में है यह पुस्तक?

**स.फा.रज़िबी:** ऐसे तो यह वज़ीर खानम नामक एक महिला के जीवन के बारे में है, पर यह उन्नीसवीं सदी के भारत के बारे में एक जीवंत दस्तावेज़ है। भाषा की दृष्टि से भी यह विशेष पठनीय पुस्तक है।

**सदस्य-3:** अंग्रेज़ी साहित्य तो ग्रेजुएशन में आपका एक विषय रहा है, उसमें भी कुछ पढ़ती हैं? अंग्रेज़ी में ऐसी कोई पुस्तक पढ़ी जो फारूकी की पुस्तक जैसी हो?

**स.फा.रज़िबी:** मैं अंग्रेज़ी में भी पढ़ती रही हूँ, अम्बर्टो इको की 'द नेम ऑफ रोज़' कुछ-कुछ ऐसी ही थी जिसमें ऐतिहासिक कथानक था।

**सदस्य-4:** हेरोडोटस को इतिहास का जनक कहते हैं, इसका भूगोल में भी कुछ योगदान था?

**स.फा.रज़िबी:** सर, हेरोडोटस को यूनानी प्रादेशिक भूगोल का जनक भी माना जा सकता है। उसने तत्कालीन ज्ञात यूनानी जगत को तीन भागों- यूरोप, एशिया एवं लीबिया में बाँटा जिसमें लीबिया अफ्रीकी भाग था। उसने एक मानचित्र भी तैयार किया था।

**सदस्य-3:** अच्छा, मैकन्डर का भूगोल में क्या स्थान रहा है? उसकी कोई पुस्तक पढ़ी आपने?

**स.फा.रज़िबी:** ब्रिटिश भूगोलवेत्ता मैकन्डर एक प्रसिद्ध विचारक थे, जिन्होंने 'हृदय स्थल सिद्धांत' दिया। उन्होंने 'डेमोक्रेटिक आइडियल्स एण्ड रिएलिटी' और 'नेशंस ऑफ द मिडल एण्ड एशिया' जैसे प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे हैं, पर मैंने इन पुस्तकों को पढ़ा नहीं है सर।

**सदस्य-2:** समर, यूराल-अल्ताई भाषा परिवार की तुर्की उपसमूह की भाषाओं के बारे में कुछ बताएँ?

**स.फा.रज़िबी:** सर, इसमें अल्ताई, खरिगीज़, उज़बेक, तुर्कमेनियन, अज़रबैजानियन आदि भाषाएँ आती हैं... इनमें से अधिकांश हस्तिसे पहले सोवियत संघ के हिस्से थे।

**सदस्य-3:** मानव प्रजातियों के बारे में ग्रिफिथ टेलर के वर्गीकरण के बारे में कुछ बताएँ?

**स.फा.रज़िबी:** टेलर ने सरि व बालों के आधार पर मानव प्रजातियों को 7 भागों में बाँटा। उसका मानना था कि मध्य एशिया प्रजातियों के विकास का उद्गम क्षेत्र था। उन्होंने 'प्रवास कटबंध सिद्धांत' भी दिया है।

**सदस्य-3:** क्या प्रजातियों के बारे में यूनेस्को ने भी कोई शोध कराया है?

**स.फा.रज़िबी:** हाँ सर, उसके नषिकर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण थे। 1950 में आई उसकी रिपोर्ट प्रजातीय भेदभाव के तर्कों पर प्रहार करती थी। उसमें स्पष्ट किया गया था कि मानव वर्गों में बुद्धि, स्वभाव और आंतरिक गुणों की भिन्नता नहीं होती है।

**सदस्य-4:** इस बारे में आप क्या मानती हैं?

**स.फा.रज़िबी:** सर, रंग और प्रजाति के आधार पर किसी भी भेदभाव को मैं अप्राकृतिक मानती हूँ।

**सदस्य-1:** अच्छा, आप लखनऊ में पली-बढ़ी हैं। यह लखनवी तहज़ीब क्या चीज़ होती है? लखनऊ के बारे में कुछ पढ़ना हो तो किस पढ़ें?

**स.फा.रज़िबी:** सर, पुराने लखनऊ के भाषा-व्यवहार और खान-पान की मली-जुली तासीर लखनवी तहज़ीब कहलाती है, जिसने नवाबों के ज़माने में आकार लिया था। सर, लखनऊ को जानने-पढ़ने के लिये योगेश प्रवीण की पुस्तकें नायाब हैं- दास्ताने अवध, दास्ताने लखनऊ, आपका लखनऊ जैसी कई पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं।

**सदस्य-3:** क्या सचमुच अभी लखनवी तहज़ीब वहाँ बची भी है?

**स.फा.रज़िबी:** सर, तहज़ीब पर संकट तो लगभग हर जगह है। हर जगह अच्छे-बुरे परिवर्तन हो रहे हैं, पर चौक में आप उस तहज़ीब को कुछ-न-कुछ तो महसूस करेंगे ही, अभी वह पूरी तरह से मरी नहीं है।

**सदस्य-3: क्रीमिया को लेकर रूस और यूक्रेन के पक्षों को लेकर आपकी क्या राय है? भारत को इस पर क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिये?**

**स.फा.रज़िबी:** सर, क्रीमिया पहले एक स्वतंत्र खानत हुआ करती थी, जो एक बड़े साम्राज्य का हिस्सा थी, बाद में उसका वलिय रूसी साम्राज्य में कर लिया गया। जब सोवियत संघ की स्थापना हुई तो रूस ने सदभावना दिखाने के लिये यूक्रेन को यह हिस्सा दे दिया। यूक्रेन के पूर्वी हिस्से की तरह क्रीमिया में भी रूसी मूल के लोग बहुमत में हैं। रूसी मूल के लोग यूक्रेन को स्वतंत्र देशों के राष्ट्रकुल से मज़बूती से जोड़ना चाहते हैं, तो यूक्रेनी मूल के लोग जो पश्चिमी भाग में रहते हैं वे यूरोपीय संघ के साथ जुड़ाव चाहते हैं। यूक्रेन के राष्ट्रपति वकिटर यानुकोविच ने यूरोपीय यूनियन के साथ एक संभावित समझौते को रद्द कर दिया तो उनके खिलाफ आंदोलन शुरू हो गया। इसकी परिणति उनके गद्दी छोड़ने से हुई, इस घटना को 'ऑरेंज क्रान्ति' कहा गया। इसी के बाद रूस ने 'अपनी हितों' की रक्षा के लिये क्रीमिया में सेना भेज दी। बाद में क्रीमिया ने एक विवादास्पद जनमत-संग्रह के बाद रूसी संघ में वलिय कर लिया।

**सदस्य-3: क्या ऐसे जनमत संग्रह भारत में संभव हैं, या होने चाहिये?**

**स.फा.रज़िबी:** भारत में राज्यों को इस तरह के अधिकार नहीं हैं और मेरा मानना है कि भारत जैसे देश में ऐसे प्रावधान संघात्मक ढाँचे के लिये खतरनाक होंगे।

**सदस्य-3: आपने अभी एक शब्द क्रीमिया की 'खानत' का इस्तेमाल किया। ज़रा इसके बारे में कुछ वसितार से बताएँ।**

**स.फा.रज़िबी:** सर, क्रीमिया में तुर्क ऑटोमन साम्राज्य की एक जागीर स्थापित हुई थी जिसके हिस्से आज के रूस, यूक्रेन एवं मालदोविया में फैले हैं। यहाँ पर चंगेज़ खान व तैमूर के वंशों से संबंधित कुछ सरदार जिनहें 'खान' कहते थे, शासन करते थे। यह जागीर पंद्रहवीं शताब्दी में स्थापित हुई और 18वीं शताब्दी तक रही। सर मुझे इससे ज़्यादा और कुछ मालूम नहीं।

**अध्यक्ष: समर, क्या आपको नहीं लगता कि तीन तलाक जैसे मुद्दों पर सत्रियों के साथ गैर-बराबरी का व्यवहार हो रहा है? तलाक का अधिकार सिर्फ पुरुष को क्यों हो? आखिर इस बारे में समान नागरिक संहिता लागू होने में बाधा क्या है?**

**स.फा.रज़िबी:** मैम, दरअसल इस मुद्दे पर हमारे उलेमा वर्ग की सोच प्रतगामी है। अधिकांश इस्लामी देशों ने जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है, इस सलिसलि में आधुनिक कानूनों को अपना लिया है। हमारे देश का दुरभाग्य यह है कि उदारवादी मुसलमि नेतृत्व का यहाँ विकास ही नहीं हो पाया है। अतः मुसलमानों का नेतृत्व कट्टरपंथी उलेमा वर्ग ही कर रहा है, वह हर ऐसे प्रयास को धार्मिक अस्मिता के साथ जोड़कर वैसा उबाल पैदा कर रहा है जैसा शाहबानो केस में हुआ था।

**अध्यक्ष: समर, वहाबी विचारधारा के लगातार फैलाव के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? इसके लिये अमेरिकी नीतियाँ कहाँ तक ज़िम्मेवार हैं?**

**स.फा.रज़िबी:** मैम, अमेरिका द्वारा सोवियत संघ के खिलाफ अफगानिस्तान में हस्तक्षेप तथा मुजाहिदीनों को समर्थन एक जल विभाजक की तरह था। खाड़ी युद्ध, सद्दाम हुसैन का पतन, 9/11 एवं पुनः इराक एवं अफगानिस्तान में अमेरिकी हस्तक्षेप से मुसलमि जगत में अमेरिका और उसके हतियथियों की छवि मुसलमि-विरिधी बन गई। सद्दाम और ओसामा इस विरिधी के प्रतीक बन गए। इन स्थितियों में अमेरिका को सऊदी अरब व पाकिस्तान का साथ चाहिये था। इस साथ की कीमत दोनों ने खूब नकाली। सऊदी अरब ने वहाबी विचार को पूरी दुनिया में नरियात किया तथा पाकिस्तान ने तालबान द्वारा आधे से अधिक अफगानिस्तान को जीतकर यह आशा जगा दी कि ऐसे संगठन राज्यों के नरिमाता भी बन सकते हैं। 'दाइश' जैसे संगठन इसीलिये पैदा हुए।

**अध्यक्ष: आपने 'दाइश' शब्द का प्रयोग किया। आमतौर पर इसके लिये 'इस्लामिक स्टेट' का प्रयोग होता है। दोनों में कुछ फरक है?**

**स.फा.रज़िबी:** मैम, इस्लामिक स्टेट शब्द से इस्लाम की छवि धूमिल होती है। ऐसा लगता है कि जैसे ये इस्लाम के लिये लड़ने वाले योद्धा हों, पर हकीकत यह है कि इनका इस्लाम से कोई वास्ता नहीं है। इसलिये इनके लिये 'दाइश' शब्द प्रचलित हुआ, जिसका अर्थ है- 'आस्तीन के साँप'।

**अध्यक्ष: यह 'लेवांट' क्या बला है?**

**स.फा.रज़िबी:** यह एक भौगोलिक अवधारणा थी जिसमें भूमध्यसागर से जुड़े मध्य-पूर्व के देशों को 'लेवांट' नामक एक इकाई माना गया था। इसे लेंवाटियन कहा जाता था। इसमें तुर्की, साइप्रस, सीरिया, लेबनान, फिलिस्तीन, जॉर्डन, सनाई प्रायद्वीप और इराक के कुछ हिस्से शामिल माने जाते थे। ब्रिटेन ने एक लेवांट कंपनी भी बनाई थी, जो ऑटोमन साम्राज्य के व्यापार पर एकाधिकार के लिये थी। अब कथित इस्लामिक स्टेट ने अपने को इस्लामिक स्टेट ऑफ सीरिया एण्ड लेवांट कहकर इस क्षेत्र का स्वयंभू खलीफा घोषित कर रखा है।

**सदस्य-1: आपकी एक हॉबी सूफी संगीत भी है? एक धारणा है कि इस्लाम और संगीत साथ-साथ नहीं चल सकते, पर पाकिस्तान में एक से बढ़कर एक महान संगीतकार हुए हैं, इस अंतरविरोध को आप किस रूप में लेती हैं?**

**स.फा.रज़िबी:** वस्तुतः सूफीवाद की बुनियाद इस्लामिक है, वह शुद्धता और ईश्वरीय प्रेम से संबंधित है। पाकिस्तान में बाबा बुल्लेशाह, बाबा फरीद, बाबा लतीफ वगैरह का आम जनता पर गहरा प्रभाव है, इसलिये वहाँ उस्ताद गुलाम अली खान, आबदि परवीन एवं नुसरत फतेह अली खान जैसे संगीतकारों को बेहद पसंद किया जाता रहा है। हाँ, कुछ तबकों में इसका विरोध ज़रूर है, पर जनता में उनका प्रभाव कम है।

**सदस्य-1: आपके पसंदीदा सूफी गायक कौन से हैं?**



**स.फा.रज़िबी:** नुसरत फतेह अली खान, साबरी बरदरस, वारसी बरदरस, आबदि परवीन, अली अजमत आदिके संगीत को पसंद करती हूँ।

**सदस्य-2: क्या सूफी संगीत और क़व्वाली एक ही हैं?**

**स.फा.रज़िबी:** सूफी संगीत की रेंज बहुत बड़ी है। उसमें गज़लें, सूफी रॉक, क़व्वाली आदि सभी शामिल हैं। उर्दू, हिंदी, पंजाबी, फारसी आदि भाषाओं में सूफी काव्य लिखा गया है। सर, क़व्वाली का जन्म ईरान-अफगानिस्तान की सूफी परंपरा में हुआ। यह समां यानी सूफी संगीत को गाने का सामूहिक तरीका था, जिसमें वरिष्ठ क़व्वाल सबसे दाएँ बैठते हैं और वही आलाप के साथ पहला छंद गाते हैं जो अल्लाह की शान में होता है। बाद में अन्य क़व्वाल उन्हें दोहराते हैं।

**सदस्य-2: कुछ खास सूफी धुनें जो आपको पसंद हों?**

**स.फा.रज़िबी:** खुसरो की 'आज रंग है', उन्हीं की 'फूल रही सरसों सकल बन', नुसरत सहाब की 'साँसों की माला पे समिरूँ मैं पी का नाम, बुल्ला की जाणां मैं कौन, अँखियाँ नू चैन न आवे, झूमो रे दरवेश, खुसरो नज़ाम से बात जो लागी...' आदि बेहद पसंद हैं, जिनको मैं लगभग रोज़ सुनती हूँ।

**सदस्य-2: अच्छा, आपने वेंडी डोनीगर की पुस्तक "द हट्टिज़, एन अल्टरनेटिवि हसि्ट्री" के बारे में कुछ पढ़ा है?**

**स.फा.रज़िबी:** सर, बस इतना सुना है कि उसमें कुछ विवादास्पद तथ्य थे और विवाद बढ़ने पर पेंगुइन इंडिया ने यह पुस्तक वापस ले ली।

**सदस्य-2: क्या इस तरह की चीज़ें अभिव्यक्तिकी स्वतंत्रता के लिये सही हैं?**

**स.फा.रज़िबी:** हमारे संविधान में अभिव्यक्तिकी स्वतंत्रता पर लोकहित में कुछ युक्तयुक्त प्रतिबंध लगाए हैं, हमें दोनों पक्षों को देखना होगा। हमारे देश में भावनाएँ भड़कने का खतरा बराबर बना रहता है क्योंकि हम अभी इतने परिपक्व लोकतांत्रिक देश नहीं बन पाए हैं।

**सदस्य-2: यह सचिनी तेंदुलकर को जो भारत रत्न दिया जा रहा है, उस पर आपकी क्या राय है?**

**स.फा.रज़िबी:** नःसिंदेह, सचिनी महान खिलाड़ी थी। क्रिकेट से जुड़ी राष्ट्रभावना की वज़ह से वे भारत की पहचान बन गए, पर क्या वे बाबा साहेब आमटे, वर्गीज़ कुरियन, एम.एस. स्वामीनाथन, कमला देवी चट्टोपाध्याय, इला भट्ट, आर.के.लक्ष्मण से ज़्यादा हकदार ठहरते हैं? मुझे तो नहीं लगता सर!

**सदस्य-3: समर, यदि आपको कभी मुस्लिम महिलाओं के बीच काम करने का मौका मिले तो आप कनि चीज़ों पर फोकस होना चाहोगी?**

**स.फा.रज़िबी:** सर, मेरे अनुसार मुस्लिम महिलाओं का शैक्षिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण मेरी प्राथमिकता होगी। इस दशा में मेरी माँ का उदाहरण मुझे प्रेरणा देता है जो लखनवी चकिन के काम द्वारा अपने साथ 20-25 महिलाओं को रोज़गार प्रदान कर रही हैं। आधुनिक शिक्षा तथा सशक्तीकरण की मुख्यधारा से जुड़ाव आज मुस्लिम महिलाओं की मुख्य चुनौती है, मैं इस पर काम करना चाहूँगी।

**सदस्य-3: इस बारे में आपके सामने कोई आदर्श है?**

**स.फा.रज़िबी:** हाँ सर, मैं अजीम प्रेमजी, सुधा नारायण मूरति, इला भट्ट और कमला देवी चट्टोपाध्याय से बहुत प्रभावित हूँ। इन लोगों ने शिक्षा व रोज़गार के क्षेत्र में बहुत काम किया है।

**सदस्य-3: कमलादेवी चट्टोपाध्याय का क्या विशेष काम रहा है?**

**स.फा.रज़िबी:** सर, मैं उन्हें आधुनिक भारत की महानतम महिलाओं में मानती हूँ। स्वतंत्रता आंदोलन और शरणार्थियों के पुनर्वास में तो उनका असाधारण योगदान रहा ही है, साथ ही भारतीय लोक कलाओं तथा शिल्पों के संरक्षण में भी उनका विशेष योगदान रहा है जिससे करोड़ों लोगों को स्वरोज़गार के अवसर प्राप्त हुए। सर, इस महान गांधीवादी महिला का इतिहास ने उचित मूल्यांकन नहीं किया है।

**सदस्य-2: अच्छा, सुना है वे एक नारीवादी भी थीं?**

**स.फा.रज़िबी:** हाँ सर, बाल विधवा ब्राह्मणी होने के बावजूद उन्होंने विद्रोह करके पुनर्विवाह किया था, उस युग में यह एक असाधारण साहस था। उन्होंने स्त्री अधिकारों तथा उनके सशक्तीकरण के अनेक सरकारी व सामुदायिक प्रयासों में भाग लिया जिसके लिये उन्हें रेमन मैग्सेसे पुरस्कार भी मिला।

**सदस्य-4: आपका शोध विषय क्या है?**

**स.फा.रज़िबी:** बलरामपुर, सिद्धार्थ नगर एवं बहराइच ज़िलों के तराई क्षेत्र का मानव भौगोलिक अध्ययन।

**सदस्य-4: इन्हीं 3 ज़िलों का खास अध्ययन क्यों?**

**स.फा.रज़िबी:** (थोड़ा मुस्कुराते हुए) दरअसल बलरामपुर में हमारा ननिहाल है और वहाँ के स्थानीय कॉलेज से हमें बहुत सपोर्ट मिल जाता है तो हमने यह शोध विषय चुना।

**सदस्य-4: समर, आपने अपने प्रिय कथाकारों में इस्मत्, और मंटो का नाम लिया था। क्या एक लहिज़ से ये दोनों कथाकार कुछ ज़्यादा ही विद्रोही**

नहीं रहे हैं?

स.फा.रज़िबी: हाँ, लेकिन उनकी भाषा मुझे आकर्षित करती रही है। उन्होंने उर्दू गद्य को बंधी-बंधाई लीक से ऊपर उठाया।

**सदस्य-3: समर, आपको भारत के शहरी नियोजन में कुछ कमियाँ नज़र आती हैं?**

स.फा.रज़िबी: हाँ सर, भारतीय शहरों का नियोजन हमें हड़प्पा युग की याद दिलाता है, जहाँ एक तरफ नियोजित 'उच्च शहर' होता था और दूसरी तरफ अनियोजित 'निम्न शहर'। बहुत कम शहर हैं जहाँ पूरी प्लानिंग के साथ शहर बने हों। अधिकांश शहरों में नगरपालिकाओं व नगर नगिमों के भ्रष्टाचार की वज़ह से योजनाबद्ध विकास नहीं हो पाया। इसलिये 'जवाहर लाल नेहरू नेशनल अरबन रनियूवल मिशन' चलाया जा रहा है। सीवर, पेयजल तथा परिवहन के ढाँचे पर विशेष काम हो रहा है।

**सदस्य-2: दुनिया के कुछ ऐसे शहर बताएँ जो इस मामले में हमारे लिये रोल मॉडल हो सकते हैं?**

स.फा.रज़िबी: सर, सगिापुर हमारे लिये एक अच्छा उदाहरण है। हमारे ही देश में चंडीगढ़ एक अच्छी प्लानिंग का नमूना है। सयोल, कोपेनहेगेन, एमस्टर्डम भी शहरी नियोजन के अच्छे उदाहरण हैं। सगिापुर की जल संरक्षण प्रणाली अनुकरणीय है।

**सदस्य-1: आप अलीगढ़ में अध्यापन कर रही हैं, कहा जाता है कालीगढ़ से जुड़े बुद्धिजीवियों ने ही भारत के विभाजन की नींव रखी थी?**

स.फा.रज़िबी: हाँ सर, अलीगढ़ आंदोलन था तो शैक्षिक आंदोलन, पर शुरू से ही वह राजनीति का प्रवक्ता बना रहा। इसकी मुख्य वज़ह वहाँ का सामंती ढाँचा रहा। धीरे-धीरे वह अंग्रेज़ समर्थक अलगाववादी लोगों का गढ़ बन गया। दुर्भाग्य से रफी अहमद कदिवई, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजाराव, के.एम. पनकिर, बलराज साहनी, प्रो. हुमायूँ कबीर तथा अन्य महान विद्वानों के ऊपर लयिकत अली खाँ जैसे लोग हावी हो गए।

**सदस्य-1: समर, आप उत्तर प्रदेश की हैं। उत्तर प्रदेश काडर में जाना भी चाहती हैं। दुनिया के सबसे उपजाऊ क्षेत्रों में स्थित होने के बावजूद इसे 'बीमारू' राज्यों में क्यों गिना जाता है?**

स.फा.रज़िबी: सर, दो-तीन कारण मुझे ज़्यादा प्रभावी लगते हैं। पहला कारण तो मुझे कानून व्यवस्था का लगता है जिसके कारण क्षेत्र का औद्योगिकरण प्रभावित हुआ है, तो बजिली-सड़क की समस्याएँ भी गंभीर रहीं और तीसरा कारण सक्षम शैक्षिक ढाँचे का अभाव भी है, खासकर स्कूली स्तर पर।

**सदस्य-1: कोई जगह बताएँ जहाँ कानून व्यवस्था की समस्या की वज़ह से कोई पहल न हो पाई हो?**

स.फा.रज़िबी: सर, पूर्वांचल में इसको हर जगह महसूस किया जा सकता है। कानपुर-गोरखपुर एक ज़माने में उद्योग-धंधों से युक्त थे लेकिन बजिली व कानून-व्यवस्था ने माहौल को नुकसान पहुँचाया।

**सदस्य-4: अच्छा समर आपने पश्चिमी घाट की बनावट पर ध्यान दिया है कविहाँ की नदियाँ डेल्टा क्यों नहीं बनाती हैं?**

स.फा.रज़िबी: सर, इस क्षेत्र की नदियाँ रफिट वैली से होकर बहती हैं, जिससे इनका बहाव बहुत तेज़ होता है इसलिये डेल्टा नहीं बन पाता। दूसरा कारण यह है कि पठारी भाग में बहने की वज़ह से नदियों में अवसाद कम आ पाता है।

**सदस्य-4: कुछ और कारण हैं? ये तो बहुत सामान्य कारण बताए आपने!**

स.फा.रज़िबी: सारी सर, अन्य कारण सोच नहीं पा रही।

**सदस्य-4: समर, पश्चिमी घाट पर बहुत उच्च ज्वार आते हैं जो अवसाद को गहरे समुद्र में पहुँचा देते हैं। पश्चिमी घाट की चट्टानें बहुत खड़ी ढलान की हैं, इसलिये भी डेल्टा संभव नहीं हो पाता है।**

स.फा.रज़िबी: धन्यवाद सर!

**अध्यक्ष: समर, आप ईरान-सऊदी अरब संबंधों के कारण दुनिया पर पड़ रहे प्रभावों की समीक्षा करते हुए लगातार 1 मिनट तक बोलिये।**

स.फा.रज़िबी: मैम, सऊदी अरब अपने को सुन्नी जगत का नेता समझता है तथा इस वज़ह से वह इस्लाम के सऊदी-वहाबी प्रकार का दुनिया भर के मुसलमानों के बीच नरियात करना चाहता है। इस्लामी क्रांति के बाद ईरान भी दुनिया भर में इस्लाम और शियाओं का नेतृत्व करना चाहता है। इस क्रम में इराक, सीरिया, बहरीन, फिलिस्तीन, लेबनान आदि में दोनों के हति टकराते हैं। फिलिस्तीन में 'हमास' को सऊदी अरब, तो 'हज़िबुल्लाह' को ईरान मदद करता है। इराक तथा सीरिया में शिया प्रभाव वाली सरकारों को हटाने के लिये सऊदी अरब ने तकफ़ीरी-वहाबी आतंकियों को बढ़ावा दिया। उनके इस काम में तुर्की और कतर का भी सहयोग रहा। ईरान सऊदी अरब के पूर्वी प्रांत के शियाओं, यमन के हूतियों तथा बहरीन के शिया राजनीतिज्ञों के माध्यम से सऊदी अरब के हतियों को प्रभावित करने की स्थिति में है।....

**अध्यक्ष: बहुत अच्छा... समर। अब आप जा सकती हैं। गुड लक।**

स.फा.रज़िबी: धन्यवाद, मैम!

## मॉक इंटरव्यू का मूल्यांकन

समर फातमि रज़िवी का मॉक इंटरव्यू पढ़कर आपके मन में एक ज़हीन लड़की का खाका बनेगा जो अपने उद्देश्यों के लिये स्पष्ट एवं दृढ़ है, साथ ही प्रगतशील एवं प्रतभावान भी है। समर के शैक्षिक आँकड़े भी उसके भीतर के जीवनस के गवाह हैं। समर ने अपने पूरे इंटरव्यू में असाधारण संतुलन एवं धैर्य का परिचय दिया। शायद उसके अध्यापकीय जीवन एवं डबिटींग को लेकर उसके अनुभवों ने उसे आत्मविश्वास दिया होगा। समर पहले ही मानती थी कि बायो-डाटा ही इंटरव्यू का सलिबस हो सकता है, इसलिये वह अधिकतम संभावित प्रश्नों के लिये तैयार थी। आमतौर पर इंटरव्यू के दौरान कुछ चौकाने वाले या घुमाने वाले प्रश्न आ ही जाते हैं, पर समर से पूरे इंटरव्यू के दौरान कोई अप्रत्याशित सवाल नहीं पूछा गया। आधे से ज़्यादा समय उसकी हॉबीज़ और पृष्ठभूमि के इर्द-गिर्द सवाल चलते रहे। ऐसा लग रहा था कि जैसे शुरुआत के कुछ मिनटों के बाद से ही बोर्ड समर के लिये सकारात्मक और आश्वस्त था, वह बस अपनी आश्वस्ति पर मुहर भर लगाना चाहता था। इस तरह समर ने प्रभावी तरीके से अपनी बातें बोर्ड के सामने रखीं, इसलिये कहा जा सकता है कि यह एक बढ़िया इंटरव्यू था। इसके बावजूद समर के उत्तरों से कई नकारात्मक बातें भी निकाली जा सकती हैं। हम इस इंटरव्यू के सकारात्मक एवं नकारात्मक बटुओं पर क्रमशः प्रकाश डालेंगे-

### समर फातमि रज़िवी के पक्ष में रहे बटु

1. समर के उत्तरों से कोई भी सहज अनुमान लगा सकता है कि वह एक जज़्बाती एवं हमिती लड़की है। घर में उर्दू साहित्य की परंपरा होने तथा उसमें गहरे तक रमे होने के बावजूद उसने अपने लिये एक नया रास्ता चुनने और उस पर मज़बूती से आगे बढ़ने का निर्णय लिया, यह उसकी हमिती को दर्शाता है। परिवार वालों की भावनाओं को प्रकट करते हुए उसकी भावनाएँ खुलकर प्रकट होती हैं, पर उन भावनाओं में भी तर्क प्रवीणता है, जो समर को विशिष्ट लड़की बनाता है।
2. कठिन व असहज करने वाले तथा आस्था से जुड़े सवालों पर भी समर की धैर्यवान एवं तार्किक विचार-पद्धति ने नशिचय ही बोर्ड को प्रभावित किया होगा। हज़िाब के मसले पर उसके बेलाग पर संतुलित विचार किसी को भी प्रभावित कर सकते हैं। समर ने हज़िाब के प्रतीकार्मिक आग्रहों के उभार पर जो टपिपणी की वह काफी साहसी थे। तीन तलाक के बारे में उलेमा वर्ग पर उसकी टपिपणी के लिये भी यही कहा जा सकता है। वहाबी इस्लाम के सऊदी नरियात पर समर का दृष्टिकोण भी बहुत तीखा एवं आक्रामक था, जो नशिचय ही समर की स्पष्टवादिता को प्रभावशाली ढंग से उभारता हुआ दिखता है।
3. पूरे इंटरव्यू में समर की बेलाग एवं प्रगतशील छवि ने प्रभाव जमाया। अपने पसंदीदा लोगों में मंटो व इस्मत चुगताई को शामिल करना, "कई चाँद थे सरे आसमों" का विशेष रूप से उल्लेख करने जैसी चीज़ें समर की एक प्रगतशील छवि बनाती हैं, जो एक आम मुसलमि महिला से हटकर है। अलीगढ़ को अलगाववाद के एक प्रतीक के रूप में उसकी साहसी स्वीकारोक्ति भी एक विशिष्ट एवं नोट करने वाली बात थी। सबसे अहम बात यह है कि समर चीज़ों के बारे में अपने विचारों को खुलकर प्रकट करने में न तो संकोच करती है और न ही इन विचारों को लेकर उसे कोई उहापोह है। सऊदी-ईरान संबन्धों पर समर की टपिपणी अपने आप में एक गागर में सागर की तरह थी। इससे ज़्यादा सघन विचार इतनी कम समयावधि में रखना संभव न था।
4. समर अपनी अभिरुचियों तथा अपनी पृष्ठभूमि दोनों को लेकर बेहद आश्वस्त भी है। उर्दू-साहित्य, सूफी संगीत, लखनऊ आदि के बारे में उसके विचार बड़े सारगर्भित हैं। उसके अपने विषय भूगोल पर भी ढेर सारे प्रश्न पूछे गए, जिनमें से एक को छोड़कर सभी प्रश्नों के उत्तर बेहद सटीक थे। मालूम पड़ता है कि समर अपने पति एवं माँ दोनों की पृष्ठभूमि से बेहद प्रभावित है तथा उसने उसे जीवन में भी उतार लिया है।
5. अपने आदर्श के रूप में समर जनि लोगों का नाम लेती है उससे उसकी विचार शैली का पता चलता है। वह विशेषकर शकिषा तथा रोज़गार नरिमाण के क्षेत्र में काम करने का सपना देखती है। उसके आदर्श व्यक्ति भी इन्हीं क्षेत्रों से सम्बद्ध हैं। सचिनि तेंदुलकर को भारत रत्न देने के मामले में उसने उन लोगों का बेलाग होकर नाम लिया जो उसके अनुसार सचिनि से बड़े दावेदार थे पर उनको यह सम्मान नहीं मिला। उसने खासतौर पर कुरयिन, स्वामीनाथन, बाबा आम्टे, कमला देवी चट्टोपाध्याय, इला भट्ट, आर.के. लक्ष्मण का नाम लिया। संभव है कि कई अन्य नामों पर अन्य लोगों की राय आ सकती है, किंतु समर की साहसी स्पष्टवादिता प्रभावित करने वाली है। हालाँकि सचिनि तेंदुलकर को भारत रत्न दिया जाए या नहीं, इसका सबसे अच्छा उत्तर वह तो कतई नहीं था जो उसने दिया, पर समर को अपनी बात पर भरोसा था इसलिये उसने बगैर अपराध बोध के सरकार के फ़ैसले पर प्रश्नचिह्न लगाया। हालाँकि पूरी तरह से यह एक सकारात्मक बात नहीं थी पर अक्सर रसिक लेकर अपनी बात को दृढ़ता से रखना सफलता के अंत तक ले जाता है।
6. समर का कॅरियर रिकॉर्ड बहुत ही प्रभावी है। उसी के अनुसार उसका इंटरव्यू प्रवाहपूर्ण रहा। यानी उसने अपने एकेडमिक रिकॉर्ड के साथ न्याय किया। उसके अधिकांश उत्तर औसत से बेहतर रहे। भूगोल को लेकर अपने निर्णय, अध्यापकीय जीवन के आगे के कॅरियर पर उसकी भावुक टपिपणी, हज़िाब पर उसका प्रगतशील दृष्टिकोण, बहावी प्रसार पर कड़ी टपिपणी, अपने विषय पर अच्छी पकड़, सूफीवाद, सूफी संगीत की गहरी समझ जैसी बातें कुल मिलाकर समर के व्यक्तित्व को साहसी, प्रगतशील और जागरूक सिद्ध करती हैं। किसी भी साक्षात्कार में सफलता की यही कुंजियाँ हैं।

### समर फातमि रज़िवी के विपक्ष में रहे बटु

1. समर के व्यक्तित्व में कहीं-कहीं दुविधा है तो कहीं-कहीं अनावश्यक आक्रामकता है। ये दोनों चीज़ें अक्षम्य तो नहीं हैं पर अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ती। हज़िाब के मुद्दे पर समर के विचारों में थोड़ा फाँक है। इस फाँक को अनुभवी लोग बहुत आसानी से पकड़ सकते थे। उसने फ़्राँस में हज़िाब के मुद्दे पर इस्लामी दुनिया का दृष्टिकोण तो बताया पर पता नहीं क्यों अपना मत बताने से परहेज़ किया। इससे लगा कि वह प्रतबिंध के खिलाफ है और हज़िाब का समर्थन करती है, जबकि इसी इंटरव्यू में वह इसकी खिलाफत कर चुकी थी।
2. समर ने कई जगह अति साहसी निर्णय लेते हुए व्यक्तव्य दिया। खासकर सचिनि को भारत रत्न देने के मामले में उसने एक तरह से सीमा ही पार कर दी। उसने बाकायदा उन नामों की भी घोषणा कर दी जिनमें सचिनि से पहले भारत रत्न मलिना चाहिये था। नशिचय ही यह एक सुविचारित और संतुलित उत्तर न था। बेहद परिपक्व उत्तरों के बीच उसका यह उत्तर उसके स्तर को थोड़ा तनु करता दिखा।
3. शहरी विकास के बारे में समर ने सारा दोष नगर नगिर्मों के भ्रष्टाचार पर डालकर काम चला लिया, जबकि और भी महत्त्वपूर्ण कारक मौजूद थे।

4. 'दाइश' शब्द के बारे में बताते हुए समर ने इसकी फ्रॉन्सीसी पृष्ठभूमि निज़रअंदाज़ कर दी, जो बहुत आवश्यक थी। 'दाइश' कहा जाए अथवा 'इस्लामिकि स्टेट' मुख्य मुद्दा यह नहीं है, जबकि समर ने इसे मुख्य मुद्दा बनाकर इस्लामिकि स्टेट, तालबिन, बोको हरम जैसे गुटों के कारनामों को महज़ गैर-इस्लामिकि बताकर उससे पल्ला झाड़ लिया। यह बहुत ही खतरनाक प्रवृत्ति है। इस्लामी कट्टरवाद की नदि करना ज़्यादा वशिवसनीय तरीका होता।

5. हज़ि़ाब के उभार को केवल वहाबी नरियात के रूप में लेना भी सरलीकरण है। इसे वस्तुतः पश्चिमि के प्रति आम मुसलमानों की प्रतिक्रिया से भी संबंधित किया जा सकता है।

6. फ्रॉंस में हज़ि़ाब पर प्रतिबंध के बारे में समर के विचार और गहरे संदर्भों की मांग करते थे, जिसकी चर्चा समर ने शायद जानबूझकर नहीं की।

7. समर के व्यक्तित्व को देखते हुए 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं प्रतिबंधों की राजनीति' पर बोर्ड को उससे कहीं ज़्यादा स्पष्ट उत्तर की उम्मीद ज़रूर रही होगी। लेकिन उसने गोल-मोल जवाब देकर बचने की कोशिश की, यह सचमुच उसके अन्य उत्तरों की प्रकृति से भिन्न व्यवहार था। उसने उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था की कमी को लेकर भी थोड़ा ज़्यादा आग्रह दिखाया, जबकि इस क्षेत्र के पछिड़ेपन के कई और भी कारण थे।

उपरोक्त कमियों के बावजूद समर आपको विचारों की परिपक्वता और स्पष्टवादिता का एक मानक प्रदान करती है, जो किसी भी इंटरव्यू के लिये बहुत ज़रूरी है। असहज प्रश्नों पर संतुलन कैसे बनाए रख सकते हैं? संभावित प्रश्नों को लेकर सघन रूप से तैयार कैसे हो सकते हैं? ये सब उसने अपने उत्तरों से स्पष्ट किया। समर के सामने अपने व्यक्तित्व में नेतृत्व-क्षमता को प्रदर्शित करने की चुनौती थी, जो उसने बखूबी प्रदर्शित की। फलस्वरूप उसे 275 में से 200 अंक प्राप्त हुए और उसका चयन IRS के लिये हुआ।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/Summer-Fatima-Rizvi>

